Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 1 | JANUARY 2023

वेणीसंहार नाटक में नाट्यशास्त्रीय तत्व

गिरधारी राम [1]

[1] **शोधार्थी, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर.**

ABSTRACT:

समस्त संस्कृत नाटक भरत मुनि विरचित नाट्यशास्त्र तथा अन्य नाट्यशास्त्रीय लाक्षणिक ग्रन्थों में निर्दिष्ट लक्षणों के आधार पर हि रचित है। ये लक्षण ही नाटकों की कसौटी भी है। प्रस्तुत शोध पत्र में भट्टनारायण द्वारा रचित वेणीसंहार नामक नाटक के नाट्यशास्त्रीय तत्त्वों यथा – अर्थप्रकृति , कार्यावस्थाऐं , सन्धियॉ , अर्थोपक्षेपकों का नाट्यशास्त्रीय लाक्षणिक ग्रन्थों के सन्दर्भ में विवेचन प्रस्तुत है।

शोध का उद्देश्य

1 . वेणीसंहार नाटक के नाट्यशास्त्रीय तत्त्वों का विवेचन करना।

2. नाटक की उत्कृष्टता के प्रमुख कारक तत्त्वों का प्रतिपादन करना।

KEYWORDS:

अर्थप्रकृतियां, अभूताहरण, नियतश्राव्य, भरतवाक्यम्।

इतिवृत्त के अनेकानेक भेद होते हैं। प्रख्यात, उत्पाद्य तथा मिश्र इतिवृत्त। रूपक के समस्त कथावस्तु की स्थिति के अनुसार धनंजय ने पांच अर्थप्रकृतियों, पांच अवस्थाओं और पांच संधियों तथा इन संधियों को 64 सन्ध्यंगों में विभक्त किया है। इनका सारणीबद्ध नाम–निर्देश इस प्रकार किया जा सकता है –

	अर्थप्रकृतियां	अवस्थाएं	सन्धियां	सन्धियों के अंग
1	बीज	आरंभ	मुख	उपक्षेप, परिकर आदि बारह अंग
2	बिन्दु	यत्न	प्रतिमुख	विलाप, परिसर्प आदि तेरह अंग
3	पताका	प्राप्त्याशा	गर्भ	अभूताहरण, मार्ग आदि बारह अंग
4	प्रकरी	नियताप्ति	विमर्श	अपवाद, संफेट आदि तेरह अंग
5	कार्य	फलागम	निर्वहण	संधि, विबोध आदि चौदह अंग
				कुल 64 अंग।

वेणीसंहार भट्टनारायण द्वारा रचित प्रसिद्ध संस्कृत नाटक है। भट्टनारायण ने महाभारत को वेणीसंहार का आधार बनाया है। 'वेणी' का अर्थ है, स्त्रियों की चोटी या केश और संहार का अर्थ है, सजाना, व्यवस्थित करना। वेणीसंहार नाटक को नाट्यकला का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है, और भट्टनारायण को एक सफल नाटककार के रूप में स्मरण किया जाता है। नाट्यशास्त्र की नियमावली का विधिवत पालन करने के कारण नाट्यशास्त्र के आचार्यों ने भट्टनारायण को बहुत महत्व दिया है। दुःशासन द्रौपदी के खुले हुए केस पकड़कर बलपूर्वक सभा में लाता है, तभी द्रोपदी प्रतिज्ञा करती है कि जब तक दुःशासन के रक्त से अपने बालों को नहीं भिगोएगी, तब तक अपने बाल ऐसे ही बिखरे हुए रखेगी। नाटक के अंत में भीम दुःशासन का वध करके उसका रक्त द्रोपदी के खुले केश लगाते हैं, और चोटी का गुंफन करते हैं। इसी प्रसंग के आधार पर भट्टनायक ने इस नाटक का शीर्षक वेणीसंहार रखा है। छः अंक के कथावस्तु वाले इस नाटक की मुख्य और सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें महाभारत की संपूर्ण युद्धकथा को समाविष्ट किया गया है।

1.1 वेणीसंहार की अर्थप्रकृतियां –

बीज – वेणीसंहार के प्रथम अंक में भीम का क्रोधित होना, युधिष्ठिर का उत्साहित होना ही बीज है, क्योंकि वही द्रौपदी के वेणीसंहार रुपी कार्य का फल है।

बिन्दु – वेणीसंहार नाटक के द्वितीय अंक में दुर्योधन का प्रणय प्रसंग जो मुख्य कथावस्तु को विछिन्न करता है, किंतु जयद्रथ की माता आकर युद्ध करने हेतु प्रोत्साहित करती है कि पुत्र वध से क्रुद्ध अर्जुन ने सूर्यास्त से पूर्व जयद्रथ के वध की प्रतिज्ञा की है –

माता – अद्द खलु पुत्रवधामर्षितेन गाण्डीविनादनस्तमिते

दिवसनाथे तस्य वधः प्रतिज्ञातः। 1

माता – असमाप्त प्रतिज्ञा भारेणात्मवधस्तेन प्रतिज्ञातः। 2

तत्पश्चात दुर्योधन युद्धस्थल की ओर प्रस्थान करता है। अंक के आरम्भ में विछिन्न कथावस्तु को जयद्रथ की माता तथा पत्नी की उपस्थिति ने पुनः जोड़कर कथावस्तु को आगे बढ़ाया है। यहीं पर बिन्दु नामक अर्थप्रकृति मानी जा सकती है।

पताका – वेणीसंहार में पताका नायक भीमसेन को कहा जा सकता है। भीमसेन का अपना समस्त व्यापार द्रौपदी की वेणी को बांधना तथा युधिष्ठिर का राज्याभिषेक मुख्य फल का साधन है। भीमसेन का स्वयं का कोई फलान्तर नहीं कहा है।

द्वितीय अंक में जहां पर दुर्योधन अपने उरु को भानुमति के बैठने हेतु स्थान बतलाता है –

''पर्याप्तमेव करभोरू ममोरूयुग्मम्'' 3

ठीक उसी क्षण कंचुकी का 'भग्नम भग्नम' चिल्लाना और बीच में आने से 'रथ केतकम्' से संबंधित होने पर भी 'उरुयुग्म' से स्वतः संबंध स्पष्ट है। अर्थात् दुर्योधन के उरु

को भीम द्वारा भग्न कर दिया जाना – जिससे की भावी घटना की सूचना मिल जाती है।

प्रकरी – वेणीसंहार के पांचवें अंक में धृतराष्ट्र द्वारा दुर्योधन को सन्धि हेतु समझाना प्रकरी नामक अर्थप्रकृति है। साथ ही षष्टम अंक में चार्वाक राक्षस का प्रयत्न भी प्रकरी ही है। उनके सभी प्रयत्न प्रतिनायक दुर्योधन के फल प्राप्ति हेतु ही हुए हैं। यह कथावस्तु देशव्यापी है।

गन्धारी – जात उपपत्तियुक्तं प्रतिपद्यस्यव पितुर्वचन् । 4

राक्षस – ततश्च हते तस्मिन सुक्षत्रिये .... तृतीयोअनुजस्ते किरिटी योद्धुमारब्धः। 5

यद्यपि यह प्रसंग संक्षिप्त है, किंतु कार्य सिद्धि हेतु सहायक है।

कार्य – वेणीसंहार नाटक में दुर्योधन के वध के पश्चात द्रौपदी का केश संयमन ही 'कार्य' कहलाता है।

भीमसेन – नाहं रक्षो न भूतम् .... हथकरीतुरगान्तर्हीतेरास्यते किम्।। 6

अतः षष्टम अंक के अंतिम भाग को 'कार्य' नामक अर्थप्रकृति कहा जा सकता है।

1.2 वेणीसंहार में कार्यावस्थाएं –

आरम्भ – नाटक के प्रथम अंक में सन्धि के संबंध में हुए भीमसेन तथा सहदेव के मध्य वार्तालाप ही 'प्रारंभ' नामक कार्यावस्था है।

भीमसेन – अथ भगवान कृष्ण केन पणेन सन्धि कर्तु सुयोधनं प्रति प्रहितः।। 7

प्रयत्न – वेणीसंहार नाटक के प्रथम में युधिष्ठिर के द्वारा युद्ध घोषणा तथा भीमसेन का युद्धक्षेत्र के लिए प्रस्थान करना, 'प्रयत्न' कार्यावस्था के अंतर्गत माना जाता है।

भीमसेन – वत्स, एते वयमुद्यता आर्यास्यानुज्ञा ..... (उत्थाय)

देवी गच्छामो वयमिदानीं कुरुकुलक्षयाय। 8

प्राप्त्याशा – उक्त नाटक के तृतीय अंक के अंत में दुःशासन वध के समय प्राप्त्याशा नामक कार्यावस्था मानी जा सकती है।

कष्टायेन शिरो रूहे नृपशुना..... संरक्ष्यतां कोरवाः।। 9

अश्वत्थामा का कथन है – मामा जी, बड़े कष्ट की बात है, भीमसेन तो दुःशासन का रक्त पी गया है।

अश्वथामा – मातुल, हा धिक्कस्टम्, सर्वथा पीतं दुःशासन शोणित भीमसेनेन। 10

अतः यहां फल संदिग्ध ही है। इसी कारण प्राप्तयाशा कार्यावस्था पाई गई है।

नियताप्ति – वेणीसंहार नाटक के पंचम अंक में सभी सेनापतियों के मारे जाने पर एकमात्र दुर्योधन के ही शेष रह जाने पर पाण्डवों की राज्यप्राप्ति का निश्चित हो जाना ही नियताप्ति है।

भीमः – पीनाभ्यां मदभुजाभ्यां ..... स्वयमनुभाविता भूषणं भीममस्मि। 11

उक्त स्थान पर नियताप्ति कार्यावस्था स्पष्ट होती है।

फलागम – वेणीसंहार में षष्ठ अंक में भीमसेन द्वारा सूचित करना कि दुर्योधन मारा गया है, जैसे –

भीमसेन – (वेणीमवधूय) भवति, संयम्यतामिदानीं धार्तराष्ट्रकुल

कालरात्रिर्दुशासन विलुलितयं वेणी। 12

उक्त वाक्य से फलप्राप्ति की सूचना मिलती है। द्रौपदी की वेणी का संहार होता है, तथा युधिष्ठिर को राज्य प्राप्त होता है। यहां पर फलागम कार्य अवस्था है।

1.3 वेणीसंहार की सन्धियां –

मुख सन्धि – राज्य की प्राप्ति तथा द्रौपदी का केश संयमन दोनों ही लक्ष्य प्राप्ति का आरंभ प्रथम अंक में हुआ है। लक्ष्य प्राप्ति की संभावना युद्ध प्रारंभ से तथा दुर्योधन दुःशासन की मृत्यु से ही हो पाएगी।

यत्सत्व्रतभङ्गभीरुमनसा ..... क्रोधज्योतिरिदं महतं कुरुवने

यौधिष्ठिरं जृम्भते। 13

इसी बीज की उत्पत्ति के साथ–साथ इसी अंक में भीम दुर्योधन की रक्त से द्रौपदी के केशों का संयमन करने की प्रतिज्ञा करता है, जहां आरम्भ कार्य अवस्था मानी गई है।

भीमसेन – सुयोधनस्य–घन शोणितशोण पाणिरुत्तं सयिष्यति कंचास्तव देवि भीमः। 14

उक्त कथन में मुख–संधि की स्थिति बतलाई गई है।

प्रतिमुख सन्धि – वेणीसंहार के द्वितीय अंक में बीज के उद्‌भेद के कभी दिखने तथा कभी नहीं दिखलाई पड़ने के कारण यहां पर प्रतिमुख संधि है।

गर्भ सन्धि – वेणीसंहार नाटक में अन्य सभी सन्धियों की अपेक्षा गर्भ सन्धि अधिक समय तक रहती है। इस सन्धि का आरंभ नाटक के तृतीय अंक में तथा अन्त पंचम अंक के मध्य होता है। अतः तृतीय तथा चतुर्थ अंक में गर्भ सन्धि की स्थिति मानी जा सकती है। और पंचम अंक के मध्य में फलप्राप्ति का उपाय स्पष्ट दिखलाई पड़ता है।

विमर्श सन्धि – वेणीसंहार के षष्ट अंक में दुर्योधन के सरोवर में छिपने की सूचना भीम की, संध्या तक, दुर्योधन के वध की प्रतिज्ञा में बाधक प्रतीत होती है। किन्तु पांचालक के माध्यम से कृष्ण द्वारा भेजे संदेश से बाधा का पुनः दूर हो जाना दृश्यगत है, अतः यहां विमर्श सन्धि मानी गई है।

निर्वहण सन्धि – नाटक के सभी प्रसंग जो कि फल की और तीव्रता से बढ़ते हैं, और भीम द्रौपदी के केशों को दुर्योधन के रक्त से बांधकर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करता है, यहां निर्वहण संधि है।

1.4 वेणीसंहार में अर्थोपक्षेपक –

विष्कम्भक – वेणीसंहार के द्वितीय अंक में शुद्ध विष्कम्भक कहा जा सकता है। जब कंचुकी को महाराज दुर्योधन से आज्ञा मिलती है कि वह देखे कि महारानी भानुमति माता की वंदना कर चुकी है, तो वह पता लगा कर आती है। यहां संस्कृत भाषा का प्रयोग है। मध्यम श्रेणी के पात्र हैं, अतः शुद्ध विष्कम्भक है।

प्रवेशक – वेणीसंहार नाटक के तृतीय अंक में जब राक्षस रुधिरप्रिय और राक्षसी वशागंधा के मध्य वार्तालाप से यह सूचना प्राप्त होती है कि द्रोणाचार्य मारा गया है, तथा अश्वत्थामा युद्ध भूमि की और शस्त्र धारण किए हुए प्रवेश कर रहा है, तब हम कह सकते हैं कि यहां प्रवेशक है।

चूलिका – उक्त नाटक में चूलिका का प्रयोग कई बार हुआ है। तृतीय अंक के अंत में 'भीम ने दुःशासन का रक्त बहा दिया है, अर्जुन तीरों से दुर्योधन और कर्ण की और वार कर रहा है, अश्वत्थामा यह देख नहीं पा रहा है और उनकी रक्षा हेतु तलवार भी नहीं पकड़ पा रहा होता है' आदि। फिर नेपथ्य में आकाशवाणी होती है कि 'महात्मन द्रोणपुत्र! सत्यवचन का उल्लंघन मत कीजिए' यहीं पर चूलिका का प्रयोग माना जा सकता है।

आकाशभाषित – वेणीसंहार नाटक के द्वितीय अंक में कंचुकी का कहना कि मुझे महाराज ने आदेश दिया है – विनयंधर। तू जल्दी जा। रानी भानुमती का पता लगा। (घूमकर, आकाश की ओर देखकर) विहंगिका! क्या सास की चरण वंदना करके भानुमति जी लौटा आई? (कान देकर) क्या कहा – आदि वाक्य में आकाशभाषित स्पष्ट दिखलाई पड़ता है।

(परिक्रम्य दृष्ट्वा! आकाशे) कीं कथयसि – आर्य एषा .... देवगृहे बालोद्याने विष्ठतीती । 15

1.5 दृश्य कथावस्तु –

सर्वश्राव्य प्रकाशं – वेणीसंहार के षष्ट अंक में प्रकाशम् का प्रयोग देखने को मिलता है। जब चार्वाक राक्षस सन्यासी के रूप में भीम की मृत्यु की सूचना देता है, जिस कारण द्रौपदी अचेत हो जाती है और युधिष्ठिर प्राण त्यागने की बात करता है तो राक्षस मन ही मन प्रसन्न होता है।

राक्षसः (प्रकाशं) यदि त्ववश्यं कथनीयं विस्तरेणावेदयितुम। 16

अश्राव्य –

स्वगतम् या आत्मगतम् – वेणीसंहार नाटक में स्वगतम् कथनों का कई बार आना देखा गया है। तृतीय अंक में भानुमति रात में देखे स्वप्न से बेचैन है, तो वह सखियों को स्वप्न में देखे दिव्य नेवले द्वारा सौ सांपों को मारने का वृतांत बतलाती है। इस स्वप्न को सुन सखियां अपने मन में 'पाप शांत हो' इस प्रकार कहती है। राजा रानी को बेचैन देखकर उनकी बातें छुपकर सुनता है, तब सखियां रानी से कहती है कि 'संताप मत करो,' तो (मन ही मन) राजा कहता है कि इसके संताप का क्या कारण है भला?

राजा (आत्मगतम्) किं न खलु अस्याः संताप कारणम्? 17

अतः साथ ही इस स्थान पर नियतश्राव्य अपवारित का भी प्रयोग हुआ है।

जनान्तिक – वेणीसंहार के प्रथम अंक में जब गांवों की शर्त पर संधि की योजना बनाई जा रही थी, तो भीम क्रोध में होता है तथा कौरवों का नाश करने की बात कहता है। द्रौपदी उसके वचनों को बार–बार सुनना चाहती है, तथा भीम को कहती है कि यह वचन बार–बार बोलो उससे उसे प्रसन्नता हो रही है।

द्रौपदी – (सहर्षम्) जनान्तिक्

नाथ अश्रुतपूर्वं इदृशं वचनम्। 18

भरतवाक्यम् –

अकृषणंमरुकृश्रान्त ..... प्रसाधितमंडलः।। 19

अर्थात् उक्त भरतवाक्य में युधिष्ठिर श्रीकृष्ण से चाहते हैं कि मानव उदार प्रवृत्ति का होकर भगवान में अद्वैत भक्ति रखें, राजा प्रजाजन पर दया करने वाला हो, विद्वानों का बंधु, गुणों का विशेषज्ञ, पुण्य कर्म में अग्रेषित तथा सभी को प्रसन्न करने वाला हो।

REFERENCES

वेणीसंहार, भट्टनारायण, संपादक रामदेव झा मैथिल, चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, चतुर्थ संस्करण 1965.

1. वेणीसंहार द्वितीय अंक पृष्ट संख्या 93
2. वे. सं द्वितीय अं. पृ. सं. 95
3. वे. सं. द्वितीय अं. पृ. सं. 89
4. वे. सं पंचम अं. पृ. सं. 109
5. वे. सं षष्ट अं. पृ. सं. 274
6. वे. सं षष्ट अं. पृ. सं. 303
7. वे. सं प्रथम अं. पृ. सं. 21
8. वे. सं प्रथम अं. पृ. सं. 44
9. वे. सं तृतीय अं. पृ. सं. 159
10. वे. सं तृतीय अं. पृ. सं. 163
11. वे. सं पंचम अं. पृ. सं. 237
12. वे. सं षष्ट अं. पृ. सं. 312
13. वे. सं प्रथम अं. पृ. सं. 24
14. वे. सं प्रथम अं. पृ. सं. 21
15. वे. सं द्वितीय अं. पृ. सं. 50
16. वे. सं षष्ट अं. पृ. सं. 272
17. वे. सं द्वितीय अं. पृ. सं. 63
18. वे. सं प्रथम अं. पृ. सं. 26
19. वे. सं षष्ट अं. पृ. सं. 31